

ॐ नमः श्री गुरुक वरु वा ज्ञा श्वा

यथा ॥ न सं वा स ड ढ डः का व न म

चार्यन. ना. ये. प्र. के. न. दा. हा. सा.:

कृत्वा यथा दृष्टं कथं स मा लं कं वा

न. वा. कि. लं. द. हा. स्वा. लं. ख. के. स्थ. वा.

यच्चरुजशहिनरुडाकाचव

॥ अथ नंगमधिवासनविधिसाद्व्याख्यान्यासयिका

यदर्थं स लेखकालेन ॥ कृपां भालकृपयन्माः

हाल जे ओ दाउ. गव झ द ड क ल. ड झ द ड या म

अथैषा यन्त्रा श्रीखससा इन्द्रा यः श्रीकृत्यचनः

॥ अं स न र शि नि २ क न र क न र द रु ॥

स. धन २ धनि २ धू २ र २ क २ न २ नि २ रु २ म २ न २

हि नः श्रुत्वा गच्छ सा विष्णुका प्रकाशाय श्रुत्वा ॥ गलसन्नकाविय ॥ मनु ॥ ओं वज्र क्षिप
 न नृममृदि क्षीं वध्वरसर्वान्न नृ २ ऊ ४ ऊं रु द्वा हा ॥ ओं वज्र य ऊं रु द्वा हा ॥ दृष्टि ॥ ॥
 पुनः ४ स्वीं क स्वीं रा व ना ॥ धृ ॥ ॥ गथा ॥ रु ग व न श्रु मू व रु वि या न ऊं न मी मू रु
 क रु मि रु मि रु ना थ जी ॥ ॥ द्वा न क्रि या शु र्णः सर्व सत्त्व हि मा र्थ य यूष्मा कै य
 ऊ ना य च ह्ना ना मू क स्वर रा व न प्र वि हा क ल हा श्मि नि नि ॥ ॥ न्या हा पि का य मू द व
 या के श्रु यो य ॥ ओं स न र सि नि र क न र क न र द रु र प च र रु न र हि नि र दू २ ओं का व व मू

२५

२

व द ध न र धि नि र धू न र ग न र मि नि र रु न र म न र व न र न सि हा क स रु सु य नि म लि म
 हा नी न क ल र क प र रु ग वा सा मा दि त्य य म व न हा क व न व मू द ध ना दि अ भि द व रा
 हा र्य च न हा क म ला य श्रु यः ॥ प्र मि रु स्वा हा ॥ ॥ थ न रु न मू द डी प च वि वि
 मि की क न का डी का र्ग ज व रु ॥ गाय श्रु क रु डी हा हा रु स्वीं रु ल १ रा य द्वा रु
 स्वीं रु ल १ द डी या मू ल म नू ऊ य ॥ धा न १०८ ॥ ॥ धू र्ण लि न्या हा द ल हा दू थ न द व त्व दू
 वि क रु ल य ग हा का न द य ग र्गि र्ग वी ऊ क ल हा य व हा य नू ॥ य च वि वि मि का न न्या हा य न स

क॥यंचसालिलहिचकथनमधुलथिलधलयूर्ध्याया॥दकक्षायकाःश्रीहीवाद॥ ॥
 वेत्यकलसाःचदिकाकसाःसांसाचकमालसाःमपागिनसायकायाचकनिमिचामयकाक
 ल१अदुआलपाक१दक्रिआदी २वियसाठसलनेमलेडाहायावालसिकलया
 साहलिकयकायलनचियध कधनडाडाखनविपाकनदडाचिसांसाकसि
 वमुककलसाकदिनेडाडगुलि कायाचकआसनकधलसवल्लागहामसइय॥काकाकने
 कसायहासखनकयकदकक्षायका॥कावाककिविसर्जनवल्लिह्य॥थलिनिगुथासःन्याहा

२८

४

५५

यचकयननयंचगकसाइदुनहासीकलकुरि नवपसलखधानाथसीन्यायचकयन्याहाव
 लियाक१वियनिरुनिरुवल्लिवियमाल॥ ॥आगमदडाकलसाःलेपयद्युयदडाइन
 साःसांसाचकममाल॥नंगकुरु यःदडायकाधनडाडावापालिचिरुकाचकमय
 जायायःसुरुवल्लासलाचकनंगः कादुयआगमकलसायंचसालिक१दयकमाल
 आगममकलसाःकहायकाकालनकलहालखकसीनंगकुरुय॥थकिन्यामपिकयविधि
 इजा॥ ॥५५॥ ॥अथमनंगद्यविधिमाह॥कलहायकाकालथायचय॥

पंचनभिमिलामवनज अथन नंगमिलामवन १ थ कल्लयनयाय ॥ ॥ अचार्यगु नमस्तु ॥
 पंचगव्याः सिधुः मधुलथिलः लखविले शुभः प्रिसमाधिः कृष्णः न्यायनसपकाशः ॥
 थननंगमिलामस्वी कर्षकावना ॥ ॥ यंचलें वें ॥ वीरनिष्य नाना ॥ अंजुं दी खें ॥ वें वा
 चनादिस्वयानध्याना ॥ नरुनि ॥ वक्षिणसर्वकथागरुहसूक्तं का नादिनिष्य नरु
 ननंगेष्टसूक्तं कीरुणा विचिंर्य ॥ आः पाः धः नि ॥ विधि थं पकायाय ॥ वृष्या न्याय ॥ पं लाः धं रु
 क ॥ थननंगमिलामवनज थिस्वी जाय ॥ अंजुं वं वजिचिरुसमय दूं नी ले ॥ ॥ अं वं वजिचि

२६

५

रुसमय दूं ॥ श्रीक ॥ ॥ अंजुं वजिचिरुसमय दूं ॥ पीक ॥ ॥ अंजुं वजिचिरुसमय दूं ॥ व
 क ॥ ॥ अंखें वजिचिरुसमय दूं ॥ ध्याम ॥ ॥ सर्वकर्मिक सकुल अथन नंगानि ॥ यधम
 पं लाः धं रुक ॥ वलिदाकय ॥ ॥ ॥ निनगाधि वासन विधि ॥ ० ॥ धं लिखन २ द
 अरुलः अं २ द अयाः मलमरु ॥ ॥ लोला चन कं क मनः सवर्षयुक्त सवी जा क न वायः
 थमकु न स विधि थं पविमान थं पकायाय ॥ धूप नी लाऊ न ला हा निनका वं क सिधवः ऊ
 ऊ मः स्वी न वं यः मरु ॥ सूर्य लयः यधम वलिदाकय ॥ अका नामरु ॥ ॥ दं अया क दं अया

८

30

या यः यं लाघं रुक ॥ दंडाया ह दयक या गु न ग उ स व रु न धि सं आ चार्य न दंडा या म नु जा य
 या यः यध मोः अका वा मू ख वलिः क्षा का क न धा व उ य उ य ॥ न ग उ स व रु धि य ॥ अं स पु नि धि
 क व रु स्वा हा ॥ द रु क्षा नि स वा व दा हा ल य ॥ व लि या क र वि य ॥ पी था दि य रु जा ॥
 म लु ल थि ले रु किः क्षा का क न रु मा य न ॥ स ग व क्ष र द कि क्षा य रु जा ॥ आ ग म रु ल
 सा य क र दं दं द य कं य रु जा ॥ गी क या र्य मा ल ॥ यं च क्षा लि या रु य रु ॥ स म या च रु ग क्ष च रु ॥
 रू नि स नं ग रु य क्रि या वि धि ॥ ० ॥ थ न लि स म रु य ध न का डी न्या क्ष इ थ न या क वि धि ॥

३१

७

२५५

कायी न्या क्ष व लि वि य ॥ थं लि वि धि थं रु ग व जी ल न रु य ना या य ॥ अथ वा इ स ल य न न्या
 क्षा ल य गु रु न सा य रु या य म मा ल ॥ उ चा य गु न म लु ल यं च ग र्वा सि न्धु क ॥ आ ग म रु न सा
 ना दि का यः गी क म जी क थं रु ला ॥ हि स मा धि क ल क्षा य रु जा न्या क्ष य न स वि धि थं
 य रु जा धू न का डी रु ल द व या क ॥ स्वी रु रु क र्वा धू य या य ॥ अं रु ग व न रु
 अ म क स र्व वि या ना रु न मा रु रु क रु मि रु मि रु ना थ जी रु य न क्रि या रु रु स र्व स त्व हि
 का थं य रु मा कं य रु ना य च रु ना रु क रु रु व न प्र वि क्षा स क्षा जी न रु लि नि नि ॥ धा व ३

पञ्चय॥ धलि अर्थ या य॥ सा इ इ नाय अ क क य च न ल च ल दा हा स्त्री क र्ण हा य क॥ ॥ वा क॥
 ओं स न २ मि नि २ क य २ क नू २ द ह २ य च २ रु न २ हि नि २ रू २ अं का न वु स व हा ध न २ धि नि २ ध नू
 २ क न २ मि नि २ रु नू २ म न २ व न २ य मि हा क स रु सु प्र मि स लि क धा नी न क ल २ क य २
 रु ग व नू मा मा दि ल य म व नू हा क र्ण य मि हा क स रु सु प्र मि स लि क धा नी न क ल २ क य २
 न ल क म ला य अ र्थ प्र मि क र्ण हा हा ॥ हां ख प जा ॥ ॥ थ न न्या हा य न स चि र्ण क या प क र्ण वि हा मि
 का रु हा अ क ल दे व या क ही रु न आ चार्य न का म जा व रु ना य अ क क दा हा स्त्री का र्ण द व या

३२

४

म नू जा य या य धा न १० रु ध न का अ ना य न द ड या क हा य स्त्री न क र्ण क॥ न्या हा य ल न द ड या
 क ल य म जि ड म द ड रु ल सा द ड या रु ड न वा ना स क र्ण क र्ण क स क न स ल य ॥ दे व या
 मि सा व र्ण द ड मि य क॥ ध लि क रु या य क र्ण स य न अ र्ण रु मि वि धि र्थ द व र्ण
 जा क क र्ण मि र्ण ना मा क र्ण ना या य थ न द ड या जा दे व ना रु मि आ रु मि वि य स रु
 आ रु मि १००० र्ण र्ण रु ला ॥ ॥ थ न आ ग म रु ल सा र्ण र्ण मा लि य जा द स व लि वि य दी ग
 व लि वि य थ न मा सा रु मि य र्ण ना हा य क र्ण क य मि मा न र्ण रु ल प क र्ण सा लि का य म रु

पुष्पवर्णः

जाययाय॥ अं वज्रय क रू॥ धम रु नै म ड॥ ॥ थनमसि ला व ना॥ मसि च प ह्ना ह्ना नात्मिक न
 जानूय नि ह्ना म न ह्ना ना म रु नू यी वि ला वा॥ अं वज्र धर्म डी ४ स्वा हा॥ धम रु धा न १० ट जायः
 या हा अः मसि म ला स र्ग॥ ल ख नी यं प न मा य वज्र वि वि ला॥ अं धी ४ भू कि स्मृ कि वी
 जय सर्वा ह्ना ने य क ला प हा नि नि डी ४ स्वा हा॥ धम रु धा न २१ जयः ल ख क ह्ना नै क च क
 ॥ थन रु रु य जा या र्दः मसि म लाः ल ख क ह्ना य थन ल ख का न ६ य कि या ल ख न क॥ श्रु क न रु सा
 न वा च क॥ यी ० दि य जा म धु थि ल सु निः हा ना क न वि स र्ज नः॥ ०० नि यू थि वा य वि वि ॥ ० ॥

३४

१०

ह अ न म ४ धी व ज स त्वा य॥ ॥ य कि ला य द व ना कू ला धि य कि ना य क रू त्वा॥ स मा धि रु य
 ला व ना प्र थ म रु ४ का र्य॥ कि म मा धि ला व ना रु जा या य॥ कू ला धि वा स न या य॥ रु जा या थ
 म रु ला धि वा स न कि न ह्ना का र्य॥ ॥ य थ्ना द ह्ना वि वि धि क्रि या रि ४ य कि मा दि क य कि
 हा कू र्य क॥ लि चो द ह्ना क्रि या या य न प्र कि मा थ य ना या रु क॥ न क र्म या नि र्मः
 ह्ना ध न कि या या रु रु य॥ कू मा नी म वा रु हा का थ हा का य ल रु ल सां का य ल रु क रु सी
 ॥ स्ना न क्रि या न ह्ना ध न या य॥ श्रु ना क नू ला रि नै वा धि वि ला स क लि खि रु र्वा ॥

॥ नमो भगवते ॥

रावना ॥ मूल्या क नृणां निवाधिविरात्स कषयानयत्तुलिरिव दवना वीरनिष्पन्नः
षट्पदवायुवर्धनसर्वकथागगान्नायकः ॥ देवस्याधियमि नृपं ध्यात्वा पूर्ववत्प्रथमं कुरु
दयादिषु हं जा ४ अं का नंद दृष्ट्वा कुरु ॥ वं वीरं न धिस्तु कुरु ॥ ॥ पवित्रं कुरु नृपिथः
चा ५ ला हं जादिन ॥ ॥ रावना ॥ कुरु पवित्रं नृपिथः ॥ ॥ पवित्रं कुरु नृपिथः
कुरु हं वीरं निष्पन्नं कुरु विमानं दवना वीरनिष्पन्नं ॥ कथागगान्नायकत्वरुवमिदं जगत्
कथागगानि ४ स्वरुवं नि ४ स्वरुवमिदं जगत् ॥ अ न या ग या व सु दुष्टि क न हं कृत्वा न रुमिः

३५

सर्वकथागगान्दृष्ट्वा यत्क्षयना नृपं जा ॥ लास्या घ ४ वा दनस्तु कि ॥ थ न धय याय ॥ ॥
अं रुग व नृ श्री त्यादि ॥ ख वायि सर्व वृद्धा वाधिसत्त्वा स्व सर्व ग ४ ॥ ०० रु वृद्ध रुवा वा सानिधि
कुरु नृप हं थ ४ ॥ थ न व जी कुरु म डी ॥ आ का हं या दे व त्वं स्व या ४ ला रु स का सा य दृ हा ४
ना ला लय दय का प्र कि मा स चि स्म ह ॥ या ४ ला ध न या य ४ अं व जी कुरु ४ ४ ॥ अं व रु पा म
की ॥ अं व रु स्म ह वं ॥ अं व जी व म ह ४ ॥ ॥ या या दि नि नां ज न ॥ थ नृ धि थ वा ४ सि ला दा आ
दि स्नान या य ॥ ॥ अं न म ४ स म क वृ द्वा नां स वा धि नि वि शु द्धा नां सर्व वि प्री न रु दं २ रु द्वा हा

यानि०

आदि

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॥ ॥ धर्मपुत्रं कर्मफलं जायते ॥ दयकं दयाया मरुतवर्जं धियाज जायया ॥
 य ॥ धन १०८ पद्यादि पूजा ॥ ला. द्य. सु. क. ॥ ॐ वज्रसत्त्व आ ॥ धर्मं शुद्धिं ध्यानयाय ॥ ॐ वज्रं
 वधं हा ॥ वज्रं वधं मूर्धा धियकं य ॥ ६४ थास्यं हा ना कृ ॥ धनवज्रं ना नचामकं हा ना ॥
 मरुतं लेयं सग्वनविषं कं हा का कृ ॥ यकं ॥ ॥ धर्मं लि. वयालि कर्मवज्रं ना नयायः
 स्वाननं कृ चकं ॥ रावना ॥ ॐ वज्रं ना कृ सग्वं वधिलि कद्वयसमाययकं ॥ अग्नं वज्रं वस्तुययन
 ॥ धनं वलि विषय ॥ कमायन ॥ ॥ अर्माद्यसिद्धिं रूपं ध्यावनाय व. सर्वकर्मि मरुतं हा न कृ विषय

五



अथवा न न॥

[illegible]

✓

स्वयं स्वयं स्वयं ॥ ओं वरु दृष्टि मठि कि लि नि कृ ल्य ॥ ओं अ आ ४ अं अ ४ स्वा हा ॥ ध म नु स्रु
 का अ धि ए न ॥ ॥ ओं अ न्या न्या न ग का स र्व ध र्मा ४ य न न्या न ग का ४ स र्व ध र्मा ४ ॥ अः
 ल्य ना न्य विष्ट ४ स र्व ध र्मा ४ ॥ ओं ॥ आ ४ ई ॥ ध म नु य न यं स्रु का ढ ल ॥ धू ना का ४
 लू रु लु आ दि स क य ॥ ध का या ॥ ॥ रा व ना ॥ क का ई वं ओं जी र्वं का वा जी नि कृ क थ
 ग न नि ष्य ना नि नू मि नि वि क्षि क स्व दि क थ ग क र्त्त य रु रु क च य र्त्त थ ग क रु द यं षू ई
 का वा दि नि ष्य ना नि रु न म्ना नि न स्मि म या नि दृ ष्ट ॥ ध म नु स्रु का अ ना ध न ॥ ओं अ ४

४॥ ४ व क व ज स्रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ना य ई ॥ ओं अ ४ व ज स ल स्रु म प य रु म हा म लु
 ल स्रु ना य ई ॥ ओं अ ४ न ल व ज स्रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ना य ई ॥ ओं अ ४ ध र्म व ज स
 रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ना य ई ॥ ॥ ओं अ ४ क र्म व ज स्रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ना य
 ई ॥ आ पा ध नि य लो य रु क य ॥ ॥ ऊ ज मि र्वा र्वा ज मि र्वा च उ स्रु य र्वा न यं थ म नं मि
 य नां थ थ स्व य ४ कान ल जा म न य र्वा न य ४ ॥ ॥ वा ई रु ला का रु ड ला हा क न म्ना कि लि नि कृ ल्य ४
 क रु व न स्रु म न क ४ ४ ४ ४ ४ ॥ ध म नु य न यं स्रु नि आ वा यी ॥ उ रु न सा ध क र्त्त ध म नु य न

पंकाश ॥ ॥ आकाशसमस्तथाय ॥ मनुष्य ॥ अवजस्रसुमात्रिकमथ ॥ ॐ ह्रीं आस्ताहा ॥ थः
 मनुष्यसंमलुसंथाय ॥ वृक्षसु. काशसु. मलसु. वाकसु. मध्यदिन ॥ ॐ ह्रीं नन
 हायकं ह्रीं ॥ धनलिश्वार्यसं वज्र ॥ थिया अजाययाय ॥ ॐ ह्रीं ॥ दयका देयायामन
 तावेकमिकमनुनेन ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं ॥ वलिविषय ॥ आकाशसु. ॥ ॐ ह्रीं ॥ वज्रसु. ॥
 सुविमर्जन ॥ आकाशसु. नाथ ॥ अन्वगुहा ॥ सुसु. चादकथागकलं लालय ॥ ॐ ह्रीं सु. पाः
 कनविधि ॥ ॥ ० ॥ ॐ नमः श्रीवज्रसु. ॥ नकर्म ॥ सु. ल. यिनसिदयक ॥ ग. सु. ल.

३८

२

पुंश्वनजसिद्धि ॥

पदअया. लंयकिसु. दयमनु. चाया अदया. नगु. धनक. मात्रिसु. कांदिन. जसु. ल
 लअनाय ॥ थया. नपि. चानप. न. ॥ ॥ रा. व. ना. ॥ क. भा. ग. ग. ल. व. उ. म. सु. ल. सु. न. क. हा. का
 नदयगकिं. किकलसु. हि. न. द. ॥ व. का. वी. ऊ. द. सु. ॥ धूप ॥ ये. था. हि. स. व. स. व. द. सु. वि
 कसंप्रकिष्ठि. का. मा. या. दे. वा. ये. कु. ॥ को. क. द. हि. सु. दि. हा. ल. को. ॥ स. म. न्वा. रु. न. सु. मा. व. द.
 अ. हा. या. दि. क. स. हि. का. ॥ अ. म. का. ई. ना. म. व. जी. ॥ द. व. का. क. ल. या. म्. ह्रीं ॥ मि. या. ॥ स. न. क. या. य. स.
 लार्थपु. कि. द. रु. ना. वी. ऊ. रु. न. म. हा. रु. न. म. धि. सु. ल. क. रु. म. ह्रीं ॥ थ. ॥ ॐ ह्रीं ॥ व. ना. प. उ. य. ॥ ॥

२५१। मा. भा. प. न. की. या. ॥

[illegible]

25

र्थप्रतिद्वन्द्वना ॥ वीजमूलमहाकाशनी अभिष्टानं कर्तुमर्हथ ॥ ॥ अथ नयनयाजः ॥ थडा
 चिरुया नस्ति नञ्कार्षेयया दयका दडाया हनी नहा वीज इविकला नय ॥ अं वजा
 दूहा वीजममूलमाकर्षय ॥ अं वजाया ह वीजममूलप्रवहाय दू ॥ अं वजस्तुट वीज
 ममूलवन्धय वं ॥ अं वजां वं ॥ वीजममूलमाषय ॥ अं डय वाजा नय स्वाहा
 ॥ करु ॥ थमरु ॥ अकार्षेयया ययायादिनी नाऊने ॥ जाप ॥ पूर्यन्ता र्यं रु ॥ का वा मरु
 काय ॥ मरुल्य ॥ दूया र्थस्ति वा यः मरुदी वा कय दयं ऊऊ मा न न लैय कि जान का अः

मणि सुविभा॥

आचार्य नालोचन नवीजा कृपया अद्वैतानुष्ठाने ध्यान ॥ ध्यानार्थं मुक्त ॥ दनयामस्तः
 मन्त्रनवकीर्तिर्यथा ॥ अकारक ॥ ॐ नवीजा विद्याना ॥ श्रीमान्नायकः क्रियाविधिः ॥ वीर्यः
 नया क्रियाथर्थरत्ना ॥ ॐ ॥ ॥ अं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ चैत्यं नमो भगवते वासुदेवाय
 कर्मसंगोऽप्यध्वरुणवर्तमानः ॥ दयः कृपास्वीकृत्य लभ्यते ॥ नमो नित्यं नमो भगवते
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कावचानाचार्यपूर्वकं कर्मचैत्यं गुरुवन्द्यं धर्मसुखं विद्यायुक्तिः
 श्रीकावचानि ॥ ॥ ध्यानं ज्ञानं कर्मनिर्णयं इत्यलं नूना कीर्त्या याय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

80

ककश्वहृदीजईकांनखजंरुकिनखीरुवित्वाःश्रुकनिष्ठशुवनंगत्वाकपुस्तकश्रुनादिमं
 सिद्धियथासंस्तुलंदृष्ट्वा॥आ.या.धू.नी॥यूयादियजा॥ओंआशखेंवीनहं॥संस्तुलंसइहावठ
 रायय॥ऊऊमानंस्वानऊनकं॥हाथऊऊलयःपश्यस्वसयाकक॥ओंसर्वकथाग
 नपूजापस्तनायात्मानंनियोग॥यामिसर्वकथागरुवसत्वाधिष्ठितमीमिषादि॥
 ५॥ॐरिषयश्चस्वस॥॥ककाःवृक्षानामरिषककुःऊगन्तास्वयवद्विष्ठागुष्ठाक
 नायथादरुकाथाददधमस्यही॥ध्वगाथायउपावसंस्तुलंसइहावहागानय॥ॐरिमस्तुः

9

89

[illegible]

एषेव ब्रह्मणो नमः॥

सुबहुनलमयंमष्टुं गाय। अहिकं वज्रमयं रुमि। कद्रुपविमध्यविस्वाकायना॥ अंका
 नसक्तुर्वसिहमा नूदं वृक्षं गीमडायूकं। अकारं वं नाचनमात्मानं रावयन्॥ हंका नोह
 वं गऊमा नूदं हस्यं मडाधनंः॥ मात्मानं अक्रात्य रुका न कं रावयन्॥ हंका नोह
 वं अश्वमा नूदं वज्रमडाधनं मा॥ मात्मानं नलिमक्तुर्वरुका न कं रावयन्॥ हंका नोह
 मयूनमा नूदं ध्यानमडाधनं मात्मानं अमिना रुका न कं रावयन्॥ हंका नोह वं गऊमा नूदं
 अरुयमडाधनं मात्मानं अभायसिद्धि रुका न कं रावयन्॥ ॥ अया धूनि ला॥ पूजा वृत्ति॥ ०॥

४२

रक्तु रावना॥ अंका नूदं वृक्षं दिव्यं अका न जं वधूवनी दलु स एव हंका न जं दार्ष्टिकः
 यद्रदनं वृक्ष स्नानसत्वं स्वद्वीजं दि न हसि कं तां विरावा॥ ॥ धूनि ला॥ धीषक्तं
 हंलः हा विधिर्य पूजा दः कृति॥ ॥ जाय मक्तु॥ अंनमः सर्व वृक्ष वाधिसत्वा नी आः क
 जावलित्वा दा॥ अं स हं कू दः॥ गथा॥ अं सर्व कथा गम सति हं क वक्ति दीप २ ध
 मं धा रुगे हं स्वा दा॥ स्त्री मा ला श्रय॥ ० ॥ य नाप रावना॥ कथार्थ का नात्य नी य रा स्व य प ना
 र्थं ऊनिका धय ना कां समय सत्वं विरावा॥ कत्स मयं स्नानसत्वं स्वद्वीजं की न हानीः समय सः

ॐ नमः शिवाय ॥

तं रूवि राय ॥ ॥ आया धनि ला ला विधि थं पूजा ॥ यं ला यरु न ॥ जाय नरु ॥ अं आ ॥ व
ऊ क रुः व ऊ य रा का धि नि ष्ठ यं स्वा हा ॥ ऊ स रूं व जा धि ष्ठा न ॥ ० ॥ ध ऊ ला व ना ॥ क थाः
सि का न ऊं सि रूं अ का न ऊं अ य ना कि रूं ग का न ऊं ग नू रूं य का न ऊं य रूं अ का न
ऊं द य रूं अ का न ऊं वि ष्ठ व ऊं व ष रूं रूं का न ऊं व ऊं नां का न ऊं न लूं रूं का न ऊं ४३
रूं सा या थ कि रूं स म य रूं लूं वि रा य ॥ न स म य रूं न स लूं स रूं दी ऊ की न ला नी न स म य रूं लूं
वि रा य ॥ ॥ पूर्व रूं वि धि थं पूजा ॥ जायः म रु ॥ अं आ ॥ व ऊ ध ऊ व नि ऊ या रूं नी स्वा हा ॥ ० ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ अथ की ल न वि धि सा रूं ॥ प्रि स मा धि धा ना न रूं म लूं रूं मि य रूं
दि रि न व की रूं रूं न म लूं रूं मि रूं स रूं स न लूं ला धि य कि म रुं ला धि य कि म रुं ला धि य कि म रुं ला धि य कि म रुं
व ना व ऊं स रूं न य न ॥ य रूं दि रि ॥ पू रूं यि ला रूं रूं न रूं रूं मि य रूं रूं वि धि ॥ ॥
न ना म लूं रूं मि म ध नि ष्ठ य रूं मि सा रि स रूं न ॥ की ल न रा व ना ॥ ॥ अ टि मि धू
न ना न रूं नं जा न न नि रूं रूं रूं वि ष्ठ व जा रूं रूं का व कि न रूं ऊ क ल रूं ऊ वि स रूं रूं नि
स ध क स रूं रूं य व ऊ या को न व ऊ रूं ऊ ल व ऊ रूं व ऊ ल वि ना न म ध रूं क ल रूं रूं रूं क ल

विष्णु क्लीशमयिरुमिन्विता वागमध्वजटिनिवजसत्तनूयालयनावृष्टौलाकविज
 यापनक्षमोवज्रकंकात्राविष्णुकसूर्यसूर्येनवकालिनापीज्जालिंदवनक्षयनाकुम्भक
 ध्वनकल्याणानववत्सवीचिसः चयःकवलयनिवनिखिलजगदिद्यावृथानिः
 नीलेयीकहुविमःमूलसद्यनः वारुवकुशयादुष्काकटललजिकः४प्रतिमूर्खः
 सूर्यरंगकटिलनकवर्द्धलदिनः४वन्मूडाललाटसूर्यचकपालमालागलावलविनद
 क्षमिज४जलीरुषक्ष४समृद्धिर्ललिरुचवायुवमोम्वानीलानललिभाक्षालेकपि
 वि तल्ला नध नू

लकुकलसुककादिनागवाजाकुरुमलुलवजवजयध्वमिक्तगार्थीवजमृष्टिद्वयपृष्ठलग्न
 कनिष्ठिकाद्वयंशृखलिकं वज्रनिद्वयपृष्ठमिमिकेलाकसदयास्यारुप्रह्लासमायनक्षयक
 गार्थीःजुकक्षपाक्षेवामार्थीकपा लखदाकंदक्षानोगकुरुकावमखनदिदिग्मुखः४स्व
 रुद्रकुरुकावानुप्रसक्तनलिमिः र्दक्षदिगविद्यान्जुक्षयःकुरुकावस्तुजिगदक्षदिगः
 काधषसमर्थयगा ॥ज्जुर्कर्मक्षपायादि॥धूप॥निजाऊन॥त्वानासकुत्तान॥नकवचनरवाः
 लसपाय॥कीर्लंयजशाकप्रकादिठगुलिसथून॥क्षीकाप्रकागायज्जुर्कुरुखीनकायलद्यायः॥

कि०

पं ली घं तु न ग आय न प्रायं म नु ग

यन्मायूर्वन्ति सः मायः किदिगसं

गलेयनिवानकीलयद्वन्द्वम्॥

नृनं रुद्राङ्कीलयश्च सर्वपापान्

पूष्यादिपूजा॥ पूषा धूय दीपः कृष्णादिः वलिदापयन्तु॥

दीनैर्वइष्टं न्यद्रोन्मगलपनिवाकीलयैर्द्वेष्ट॥ओं घघ. द्वा दय २ ख्यादि०॥ पूर्व॥ १ ॥ अविद्या

॥ हूं हूं हूं ॥ वलिया कवी ॥ कभा लख्य यूवादिदि कू की ल

॥ की लं ॥ अं ॥ ४ दं ॥ य मा न का दी न र्व दू षा न् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

हैं रुटाओं व ऊ की लय व ऊ ध आ ह्य य नि ह रु टां

॥००॥ गिकी सन विधि ॥

॥३॥ यमा कं का

84

2

नकादि सर्वदूषा नूवना नृपनिवाजा कील्यं कुरु ॥ उरुन ॥ २ ॥ अं प्रह्ला नकादि सर्व

दृष्टान्वज्ज्ञानसयनिवाको लयैरुक्तः ॥ यन्त्रिमः ॥ ३ ॥ अथ दमाककादि सर्वदृष्टान्

अमास्यजिवा नान्की लयं रुं

रुद्रादक्रिया ॥ ४ ॥ अं अचलादिसर्वदेवानाः

ग्रीष्मर्षे विवाही लेयर्द्रुद॥

श्रुते ॥ ५ ॥ अंककिं जाऊ कादि सर्वदृष्टान्नेयः

हसयेति वा नान्कीलयेद्गुरुः ॥ नञ् अत्य ॥

वाजान्की लय द्रुष्टे ॥ वायूव्यो

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

शंकरुट् ॥ ॐ नमः ॥ ८ ॥ अं उषीष चक्रवर्तिनादि सर्वदृष्टान् वस्त्रास्यपिवाजाकील
 शंकरुट् ॥ ॐ नमः ॥ ९ ॥ अं अथः स्रक्तजाना सर्वदृष्टान् यथीदवनास्यपिवाजाकीलयः
 शंकरुट् ॥ अर्धः ॥ १० ॥ ॐ नमः ॥ लनयुजाविधिः ॥

४६

२

२५ अं नमः ॥

शंकरुट् ॥ अं नमः ॥ ११ ॥ अं नमः ॥ १२ ॥ अं नमः ॥ १३ ॥ अं नमः ॥ १४ ॥ अं नमः ॥ १५ ॥ अं नमः ॥ १६ ॥ अं नमः ॥ १७ ॥ अं नमः ॥ १८ ॥ अं नमः ॥ १९ ॥ अं नमः ॥ २० ॥ अं नमः ॥ २१ ॥ अं नमः ॥ २२ ॥ अं नमः ॥ २३ ॥ अं नमः ॥ २४ ॥ अं नमः ॥ २५ ॥ अं नमः ॥ २६ ॥ अं नमः ॥ २७ ॥ अं नमः ॥ २८ ॥ अं नमः ॥ २९ ॥ अं नमः ॥ ३० ॥ अं नमः ॥ ३१ ॥ अं नमः ॥ ३२ ॥ अं नमः ॥ ३३ ॥ अं नमः ॥ ३४ ॥ अं नमः ॥ ३५ ॥ अं नमः ॥ ३६ ॥ अं नमः ॥ ३७ ॥ अं नमः ॥ ३८ ॥ अं नमः ॥ ३९ ॥ अं नमः ॥ ४० ॥ अं नमः ॥ ४१ ॥ अं नमः ॥ ४२ ॥ अं नमः ॥ ४३ ॥ अं नमः ॥ ४४ ॥ अं नमः ॥ ४५ ॥ अं नमः ॥ ४६ ॥ अं नमः ॥ ४७ ॥ अं नमः ॥ ४८ ॥ अं नमः ॥ ४९ ॥ अं नमः ॥ ५० ॥ अं नमः ॥ ५१ ॥ अं नमः ॥ ५२ ॥ अं नमः ॥ ५३ ॥ अं नमः ॥ ५४ ॥ अं नमः ॥ ५५ ॥ अं नमः ॥ ५६ ॥ अं नमः ॥ ५७ ॥ अं नमः ॥ ५८ ॥ अं नमः ॥ ५९ ॥ अं नमः ॥ ६० ॥ अं नमः ॥ ६१ ॥ अं नमः ॥ ६२ ॥ अं नमः ॥ ६३ ॥ अं नमः ॥ ६४ ॥ अं नमः ॥ ६५ ॥ अं नमः ॥ ६६ ॥ अं नमः ॥ ६७ ॥ अं नमः ॥ ६८ ॥ अं नमः ॥ ६९ ॥ अं नमः ॥ ७० ॥ अं नमः ॥ ७१ ॥ अं नमः ॥ ७२ ॥ अं नमः ॥ ७३ ॥ अं नमः ॥ ७४ ॥ अं नमः ॥ ७५ ॥ अं नमः ॥ ७६ ॥ अं नमः ॥ ७७ ॥ अं नमः ॥ ७८ ॥ अं नमः ॥ ७९ ॥ अं नमः ॥ ८० ॥ अं नमः ॥ ८१ ॥ अं नमः ॥ ८२ ॥ अं नमः ॥ ८३ ॥ अं नमः ॥ ८४ ॥ अं नमः ॥ ८५ ॥ अं नमः ॥ ८६ ॥ अं नमः ॥ ८७ ॥ अं नमः ॥ ८८ ॥ अं नमः ॥ ८९ ॥ अं नमः ॥ ९० ॥ अं नमः ॥ ९१ ॥ अं नमः ॥ ९२ ॥ अं नमः ॥ ९३ ॥ अं नमः ॥ ९४ ॥ अं नमः ॥ ९५ ॥ अं नमः ॥ ९६ ॥ अं नमः ॥ ९७ ॥ अं नमः ॥ ९८ ॥ अं नमः ॥ ९९ ॥ अं नमः ॥ १०० ॥ अं नमः ॥

लाये ४५ विचरन मधुलाधियनिमा लाके ॥ या यादि प्राकृष्टादिं यं चाय हाव पूजा ॥ थ कालि
 न स्त्रीपाक्षल जान के स्याल ॥ ॥ आचार्य च लुथास्य धूय याच ॥ ॥ श्रीरुगवत्तुम्
 कविशाना जैनभासु कर्कशुमि ॥ ॥ कृमिकनाथ प्रकिष्ठा कर्कशुमि ॥ ॥ मिथ्या नामेन
 कयाय यूष्मा कय जनाय च ॥ ॥ भेरुक स्य रुगवत्तुसा दं कर्कशुमि ॥ ॥ अथदि सव
 वृद्धा नां सुविमर्शय किष्ठा साया दवाय था कृको कर्कशुमि ॥ ॥ हा कृमा अणु सव
 नाथ रुत्ता पयादिका ॥ ॥ मान् गृहान अम कस्या र्थाय वाधिस त्वय वृद्धय समन्वा रुजु मा

वृद्धा जग चक्र क्रिया रुदा रु लम्ब वाधिस त्वय ॥ ॥ या चा नाम रु दवना दवना लाकया ला
 ॥ ॥ रुका संवाधि क्षास ना रि न का स त्वा ॥ ॥ थ य क विद्वज च कृम अम का रु स हा व जी परिष्ठा
 विधिसंय ना क विष्ठा मि जग
 सत्तिष्ठा स कालि न म ल स व मा ॥ ॥ ४५ थ ॥ ॥ कृप चा न अ न कया मया दाय
 अथम स रु ली ज ना स रु ली जी विरं च म ॥ ॥ सम र्थ स व द वा नी रु वि ना रु न सी हा य ॥ ॥ अ व व रु
 रु विष्ठा मि वाधि विरु क व न स र्था ग न कृ ला त्य रि स मा य स्या न र्हा य ॥ ॥ अ य म दि व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सदृशः यद्वाभय निजूरु न संनियाना रुवदृशः सर्ववृद्ध निमकनाम् ॥ ३ ॥ वजीक
आदि ॥ यायादि ॥ नीजीकेन ॥ जकं वं ॥ ४ ॥ विमय वं ॥ यक ॥ सिधुः स्वचः आदि ॥ लजीजिह्व
धु ० पीपिसविच ० ० मं क्वा य ॥ ॥ खयसाउल ॥ यमि क्वा दउस इविकगाजय ॥
स्तान ॥ यं वा मक यचय ॥ ॥ यंचवल्क ॥ यंचग यंचग ॥ ॥ कर्क कर्क ॥
लंखक यस्तान या क क ॥ अमि ना रुचि क ॥ यक य म क ॥ यंच विं क ॥ क्वा स्त्री या क क गाथा
॥ ॥ यन्मकी लं स क ल स त्वहिर्ग न क स्य वृद्ध स्य दो म न हि क स्य विवृद्ध वृद्ध ॥ ५ ॥

४८

२

संग वृज निरा वात्मक स्य कन्मकी लं रु व रु क य न सा रिष केश ॥ थन ना निरु दन ॥ स्वस्ति
वासु न ॥ ॥ रु नं ॥ अक्रो स्य चिं क नील व रु क्वा स्तान या क क ॥ यन्म ग लं स न न ज स
नयू कि क स्य धर्म स्य क न क थि ॥ क स्य निजूरु न स्य लो क रु यं प्र कि हि क स्य नि न
त्म क स्य कन्मकी लं रु व रु क यः ॥ न सा रिष केश ॥ यथा हि जा क मा रु न त्या दि ॥ थ
नययू यो क ल रु व रु वि म ॥ ॐ वा ॥ ५ ॥ इ रु क व च व रु स्वा हा ॥ गा वि य ॥ अं दि व वा स स स्वा
हा ॥ ॐ य रु ल आ दि स्वा ना ० व रु गा रु ग कि ज आ ज ग व य ग ल सिं ध न क्वा य ॥ ॐ अमि

लक रुख हा हा ॥ गोला च नं कि च क ॥ पृष्ठा दि य जा ॥ ला घं मु क ॥ व जा व हा म डो हा ना
 क न ॥ ० ॥ थ न व ज थि य क ॥ ज ॥ ना उ त ॥ आ ॥ क थ स ॥ दं ॥ नू र व ड ॥ की ॥ मि र वा नि ग
 उ स ॥ ज ॥ क स व न नि या स ॥ र ॥ ॥ क स स ॥ नं ॥ क उ स ॥ र्क ॥ क या ल स ॥ स ॥ क रू स
 ॥ स के कि न थि यो रा व या य ॥ थ ॥ ॥ वी जा क व हा दे व या क अ धि ष्ठा न या य ॥ ॥
 म उ म क ना र्वा सूर्य च नु क ना त्या दि क स व क न च कू षा नू प का लि क ॥ थ न चि रु का न हा
 थ प जा या च क ॥ ख लि वा क य उ र्पे का य अं ऊ न ची रु का न ल ड क्रा य ॥ इ ष्टि कं क ॥ द ड या

४५

३

मि र वा स च नु सूर्य हा ल य ॥ अं ऊ न का या व य ल क लि स का या ड ॥ लू या हा ला की अ ह्मा न ष्मि
 मो व का हा ल य ॥ अं ऊ न ड लं हा ड या य ॥ ॥ म क ॥ अ ह्मा न य ट लं व ल व य पी क जि ने रु व
 हा ला का व य ना ऊ न य थ लो क ॥ ॥ मि मि ली ॥ अं व क रू स म क व कू वि ष्म ध न स्वा हा ॥
 अं ऊ न ड ल क ॥ द ड या मि र वा नि ॥ ॥ गे उ र्पे म क क न ग ड दि य व कू ष दं ॥ अं ह्मा न व कू ष
 रू ॥ क रू क न ॥ अं प ह्मा व कू ष दं ॥ अं व ज व कू ष दं ॥ व ज व चि न मि र वा नि षे स व ल ॥ अं ह्मा न व
 ऊ न व कू ष दं कू रू ॥ ॥ ह्मा न व कू अ धि ष्ठा न ॥ ॥ थ न ह्मा क या अ र्थ क न ॥ कि हा ड या र्पि ना ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१८७६ हिमालय सर्वसत्त्वाध्यवित्तिकय कृपासया॥

॥ ह्रीं श्रीं नमः कृत्वा लयागुदृष्टिनाथ

नडिप्ररुमिनः विषयसकलम् समस्तप्राणियनिर्तः ऊजमानयनिर्तः हृलफलस्थनः कनू
॥ दृष्टिनस्वयाविज्ञायमाने ॥ ॥ विम्वक्षानोदयोनाजाः जगद्द्रव्यः क्षांक्षीतिहन

दक्षिणा ४॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥विम्वक्षनादयानाजाः जगद्वृत्त्यः क्षाक्षसिंदन
स्वक्षनाक्षयागुदक्षयानाजायाकृगथक्षसि

हृत्थागवर्तनः कर्त्तव्यमयनं भावः यथार्थं विषयपनिस्तुः कलपालसनः कर्त्तव्य इष्टिनः स्वर्गवि
ज्जयमालः ॥ ॥ गार्गा विनिर्गकनस्मिन् ४ सर्वदिग्ग्लोकधातुस्तनाम् ॥ ॥ हं ० ॥

॥ माया विनिर्गक नस्मिहि सर्वदिग् लोका धातुस्तथा ॥

卷之四

8

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कथं नमस्कृत्य लयालया मिखा निगुलिया कज्जस्मि नंगथु मिदिगसंपका मया कथं थर्थं क
 लयालया दृष्टी नः पूर्व दक्षिणः पश्चिमः उरु नः अग्न नेम रा वायु ं नीक्षान अर्ध उर्ध्व
 क मिगुदी ग ही कलयालया दृष्टी नः प्रका मया कथं थर्थं क नूष्ण दृष्टि क या उ सा
 सवि श्रय माल ॥ ॥ रूप नः सर्व सत्त्व लोक या कं दिव्य चक्र क या उः
 कलयालया स नः सवि श्रय कथं थर्थं ऊ ज्ञा मान य निरु स दृष्टि सा या उः ऊ न ध न र्गान न र्ग
 पति श्रय श्रय ग या दं कलयालया न क नूष्ण दृष्टि सा सवि श्रय माल ॥ ॥

कर्मशास्त्रम्

ॐ मंगलास्तेन यस्मादा ॥ ॥ ॐ किं दृष्टि दान विधीषा ० ॥ अथ धृक् मधूपासनया
कजागलक्षिदलसः धलकस्ति कस्य पूजाया दाजः पूर्णा दण्ड सुखे त्वं वा कयाडाः
थनसुवर्णयाथालसदं द्य ॥ ॥ ॐ कीं स्वाहा ॥ नाचा
यक ॥ ॐ आः सर्व कथागकधृ ॥ मधूपासने दूरे दूस्वाहा ॥ पाल ३ नक ॥ ना
चायक ॥ ॐ सर्व देवना विनामृगधाम स्वाहा ॥ इ इ मां क ॥ दण्ड या नी चाया थलमं इ इ स
लिधलकस्ति लफ कस्य कलं खवा १ कस्य क्काय ॥ यं लो द्यं मुता ॥ वजां व क्षमः डानः क्षमा

५९

कृत्रविशर्जना ॥ ॥ ॐ किं जात कर्मशा ० ॥ विपालू चाकूकयः भावाः अंगुष्ठाधि ॥
स्त्रीकूक ॥ एवना ॥ कदन्वा चार्यस्व द्दीज जा मो दव नानी नामा कृत्रं विरावायः
दीयादीयस्व धरु कदस्तिना ॥ सर्वाकाक्षधुयनिपूर्व विरावाय पूननागः
एव ददया नामा कृत्रं निष्ठा ॥ यं दवना ददयप वेक्षकथे वरु वक्षसं रुचः
स्मादिकं कृत्वा ॥ आ कर्मक्षः पाद्यादिः नीना अनगा ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ थमः कुनय क्कमः नय
क्कगवाय क्कपलपवगधर्क ॥ लं खनस्त्रानया कर्क ॥ नस्त्रा कर्क कननः द्वा लस्त्रानः

मसवयक ॥ लदयायनिरुवांठरुलसा कस्तनसहाय ॥ अं सर्वकथागनकायविहोष
नस्वाहा ॥ यववल्कनः कस्तनसंगय ॥ वनाचनविं कल्ले हा लघनस्नानयाक ॥ ॥
यसुत्ववत्नववधर्मवजीम ॥ डाऊननसदिकस्यविषयकस्य वनाचनस्यरु
वइरुविनाहाकस्य नमः ॥ लंरुवरु ॥ अतिकर्नकवाय ॥ कस्तनना ॥ अं वरु
सत्वआहाथनगोलोचनैकिक ॥ अं आहकिंलकरुषहाखाहा ॥ अं आहअमूकवजीरु
वनामकथागनकरु वस्वा ॥ दयाया कृनामरुलजगुलिनामकय ॥ दयायानुग्वंउसवज

थियकं नः दयायामर्कजायधन १०८ ॥ यं लार्थं मुक्त ॥ ॥ ॐ निनामा कवचः ॥ ० ॥
अं उपन्नदागतयस्वाहा ॥ ॥ कनकरुलप्रासनार्थप्रणिमास्नानैकावयक्त ॥ थलिरुल
प्राधानक्रिया ॥ अमाद्यसिद्धि ॥ विं कल्ले हा लघनस्नानयाक ॥ ॥ गथाग ॥ श्री
वरुवरुवयक्तवरुपाविस ॥ मूठिनाचसदिकस्य अमाद्यसिद्धिं यन्मङ्गलं दि
नकवनार्थसिद्धिं नमंगलं रुवरु ॥ अतिकर्नकवाय ॥ थनकाइपाकवस्तुविय ॥ अं दिः
यवाससस्वाहा ॥ अं वाध ॥ ईदृकवचवस्तुस्वाहा ॥ गं दयक ॥ थनवरुनालनामकरु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नायगाथनलि नाना ससारुलनं का आदिं लं रु लु स क म द क सा शि प कि नि स क स्य ॥
लं ख न हा स्य ॥ ध न या य ॥ अं आ ॥ सर्व स र्वा ध न रू रू ॥ थ न च द स र्वा य ली द आ दि रु
वा क स न क ॥ अ म सि आ दि य ॥ अ न ॥ अं स मा धि रू लं स र्वा कि न य रू पी न न र्वा
स्वा हा ॥ अं अं स्वा हा ॥ इ इ का क ॥ ना वा य क ॥ य पू षा दि य ॥ जा ॥ ला य रू क ॥ ॥
अं स यो रू न य स्वा हा ॥ ॥ रू कि रू ल या स न वि धि ॥ ० ॥ न क ॥ अ न पा स ना
थं यु कि मा स्ता नं का न य रू ॥ य न ग रू लं स्वा दि ॥ ॥ थ न व रू काले च म क रू का य ॥ य कि न

५३

७

रु दि ग का य ॥ अ वि य ॥ ना ना रु न ध वि य ॥ अं स र्वा व न ध रू रू रू स्वा हा ॥ थ न स रू व रू या
थ न स रू काले च म क रू का य ॥ अं स र्वा दि ग का य ॥ लं ख न हा स्य ॥ ध न या य ॥ वा क ॥ अं
स म क व रू न ॥ अं अं व रू न द रू ॥ क ज व रू न द रू स्वा हा ॥ अं आ ॥ रू स्वा हा ॥ थ न लि आ
गं दू य रू पा या थं ना वा य ॥ क ॥ अं अं स्वा हा ॥ जा न क वा क ॥ अं पा षा य न
म ॥ अं गु ला ॥ अं अ पा ना य न म ॥ द थ ला ॥ अं स मा ना य न म ॥ वा ला ॥ अं दा ना य न
म ॥ वि ला ॥ अं वा ना य न म ॥ क ला ॥ अं दि वा ने स मा धि ध्वा न पी न न स्वा हा ॥ क ज य

अनेपासेन॥

लेकायावनकाहाडायाडावाकासकय॥थमानकदअस्वयाडा॥कलेखकयवपूयले
खनहायस्वलाक॥थनस्वीमालकःग्वयग्मालदाहाजय॥ ॥थनऊनकक्रिया॥ ० ॥
कथूखयक्रिया॥कूदूयाकया॥लेविय॥अंश्रादिब्यवाससस्वाहा॥हीखदचन
नकिचके॥चकामधिपपादक॥स्यवादि॥कखरुजादाहालेप॥पूयादिपूजा॥
लाद्यंमुक॥ ॥थनकथूघयक्रिया॥ ० ॥कक४उपनयनविधिंकूर्याक॥देवगाह
दिचन्द्र॥थनऊऊमानंकस्वानकासीहाथजालपंचान॥ ॥अंसहासुरखजेंद्वंहाहा॥

५४

८

उपनयन

सूचकस्त्वमिहिन्यस्यसर्वदेवकारुथागरुजसिस्त्रुवक्षसंहनक्षपर्वकनद्विअंऊलि
वध्वविष्णुपयक॥महासुरखमहाजाग॥विर्वसर्वऊगत्यकिं॥सर्वसत्वमनावापि॥सर्वस
हृदिह्मि॥कथासर्वसत्वपिना॥चैव॥कामागुसमयाणिना॥कनसत्यनमनाथ॥
कामात्वपविपूजयक॥धर्म॥धामानधिष्ठानात्समर्थस्मनक्षदयि॥कपयास
र्वसत्वानी॥कून्धीसर्वसिद्धय॥स्वानपासलदवयाकहालेक॥ ॥अंषकिवागुत्वा
हा॥ ॥यंलाद्यमुक॥ ॥रूकिउपनयनक्रिया॥ ० ॥कक४पूजाकननार्थप

५५

ॐ
ॐ
ॐ

किमास्तानेका जयगुणथनचूठाकर्णुयाकलाकध्वनचिद्रुद्धीस्तानयाकक॥नेजखभा
गाथागायनमर्कलंकमलपाधिसवजकीध्वनकायध्वपवनराधिरयस्यलाक॥लाक
ध्वनस्यसुगनस्यसुखत्मकस्यः कर्त्तृगर्लरुचक्रुपनमारिधकशाथनस्यैअह
खालवाजभाषादोलवयावका॥ ॥कंकाभक्षसुवर्णकूर्तनरावयव॥अंस्वावजल
विष्ठाधनःसुर्वाहानवानानुद्धय२कंस्वाहा॥थनलमेल्ननक्रस्योलेखदलव
याय॥अंभमक्षधिकनक्षस्वाहा॥थनस्तानयाककनलसैरुवचिद्रुद्धीधनस्ताना॥

५५

२

क२

यत्तर्गलैरुक्तस्यजिनपुनसत्कुरुनाचववमहासुराधिरस्यःथीनलसैरुवजि
नस्यनिष्ठाधिरस्यकर्त्तृगर्लरुचक्रुपनमारिधकशा॥थनवजतावामनरुद्धीया॥रु
लकंक्रमनसाउक्षस्वस्तिवा॥ या रावयादाडाकृत्कनसकवक॥युर्गाजना॥अं
जलनडलक॥अंस्ववर्णकि॥ लकरुषस्वाहा॥नानोरुनक्षवियगंअंस्वा
वनक्षरुषस्वाहा॥वाकुरुर्त्तिनिनकायक॥ ॥मकु॥अंकावलयववृद्धमक
टमलुर्त्तिनिष्ठाधिर॥००दीनसर्ववृद्धाजीध्वधुर्त्तिनमस्तुर्त्ति॥युष्माकंयुक्तनाथयमक

वृत्तद्वयः

कसूदलु र्नासिक धिरु नां वियगां वज्र नल्लगां ॥ थन उड किं हुअ किं च वास जाकि वडि
थसं सैवल वियगा नील कमान वियगां वन मा न रं रं रं वली हु ना र्ना अया य ॥ यथा
दिपूजा ॥ ला द्यं रु क ॥ क्षमा कया ॥ ॐ स म ह्य न य स्वा हा ॥ ॐ कि व ना द क्ष वि धिः ॥ ० ॥
अथ वृत्त मा क क्ष मा वरुं क्रिया ॥ ॥ द व सै द क्ष न न वि श्र क ॥ लि हा वि श्र च क ॥ थ
न स लु ल थिल क द व य जा च क ॥ थ का दिन हा थ जा क ल य वान ॥ आ चार्य न द्य ० था र्ग म थ
गां ॐ सर्व क था ग क प्र कि मा दि क व नि ४ स्वर हा व वा धि वि रु ल दू पी वि ह्य य य न ॥ वा धि वि रु ल

५७

११

वात्त व व द्या रु ध ग ना म ना वा धि स त्वा म हा स त्वा र व म ति दि द्य य सि न्नि ४ स्वर हा व नि य
लं व स र्व स त्व क का व र्ग क था ग क स म ना ह्य न वा धि वि रु मि कि स्म र्ग ॥ क ल यो ल द क्ष न न
वि श्र म्ना ल ध क रु रु मा न द व ॥ या क प्रार्थ या च क ॥ ॥ थ न द अ य जा यो च क ॥
यं ला द्यं रु क ॥ ॐ सूर्या र्ग न य स्वा ॥ हा ॥ क्ष मा क व म रु क र्ग स ॥ ॐ कि व रु मा क क्ष मा
वरुं न वि धि ॥ ० ॥ ॥ रु क ४ य र्व द व ना म मा वरुं न वि धि ॥ ॥ थ न यि दि या य द रु सा ल
सा र्ग द का य गु न स लु ल द न क म क य जा वि स र्ज न ॥ स्वी कृ हा क र्ग र व ना नी र्ग रु न लो हा

५८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गिन नका पंचगव वि यथ कि ॥ गथन दय का दडा या न्न इ कि हा य के हा क रु दि का का य ॥
झास कृ दि य ॥ ॥ थलि वलि वि य ॥ पी था दि य जा म लु ल थि ल कि ली न न ॥ बा ना क न ॥ ख
मा य ल ॥ वि स र्जन ॥ आ धि वा द ॥ ॥ स र्वे मा रु नि कृ य ॥ च क य जा ॥ द क ल ॥ वि भ र्जन या
य न न ॥ आ ग म रु ल सा र्य वी ॥ ॥ क ल ॥ दि गु ॥ रु थ न ॥ स म या च क ॥ बा ना क न ॥ को ला ॥
ग ल च क ॥ क ले ख व लि कृ य ॥ थ न दू स ल कि या या द क य रु ला ॥ ॥ कि दू स ल कि या स मा फ ॥
॥ ० ॥ आ दो आ वा र्यो दि स्त्रा नं का न य न ॥ रु थ न या व लि वि स र्जन या द थ न स न ॥ ग द ॥

५८

१२

थ लि अग्नि कृ लु स्त प ना ॥ य र्थ लं क ॥ ना हा य ल ॥ ना ग पा ॥ श्री ल श्री ॥ य क ॥ य कि सी ॥ ॥ ना य अ लि
क था ग न रु ल सा ॥ खा सि व लि ॥ आ ग म रु ल सा ॥ म हा व लि ॥ थ न वि वि वि ध न थ ॥ स्त प ना या य ॥
स र्यो र्ध गु व या दा र्ध ॥ पू जा रु ॥ ॥ ल को प ॥ गु न म लु ल व लि वि य ॥ प क ग व क्का य ॥
सि ध क ॥ अ धो ष ना ॥ क रु ल सा ॥ ॥ आ ग म रु ल सा ॥ य च र्के रु आ दि पू जा ॥ आ दि गु
ह य न ॥ ना ल पू जा ना ल क्का य ॥ न दि न म ल्का ल ॥ रु स मा धि द गु लि या य ॥ लं क ॥ धि वा
स न ॥ अग्नि स्त प ना ॥ मा मा क पू जा ॥ य ली द ड प जा वि धि र्थ ॥ म लु ल पू जा या य ॥ रु म स

७०६
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

च नू जाय ॥ थन व ला श ल दा अं हि क्रि या कू र्ण रु य ॥ ॐ हि म् च क द क साः ल सा सं रु य
गु न्म म् गु ल द न कं व लि वि स र्ज न या च क ॥ ॥ थ न स्त्री कू र्ण ल क र्ण ल व ना ॥ क क ४ स्त
द द य च न्द्र म् ॥ ४ का न र्ज वि
य स द द या इ त् ॥ ४ य नि मा
जं व रु स त्व ॥ ४ ॥ थ न प द पा व द व या भा उ ह व रु स त्व म् डा न थि य क ॥ या या दि नी जी ऊ
न व रु न वा म क र्ण ना य ॥ थ न स्त्री मा ली द अ या ग ल स का वा य क ॥ ५ ॥ कू न १ लि वि चा स क

५५

१३

या अ न स्वा क का ल वि कं क या अ ॥ ३ ॥ ल सः र्व च कू र्ण ल वि रु अ दि ग का या अ ॥ ३ ॥
ल क य ना द अ या नः वि क कं ग लो रु मा स मा स क य क रु किं ग थ म् कू धा न ग य उ य ॥ अं स र्व क
थ म् ग क का य वि ॥ ४ ॥ थ न स्त्री हा ग ॥ थ म् कू न स का पा च नः कू स क न सः न स्वा क चि क न
वू य ॥ क ल वि क नं कू स वू या रु ॥ अ या र्ण कू स क न स न य ॥ भा ल कू य कं ॥ न उ हा य
जा ग द किं ॥ ४ ॥ क या ॥ नं ग न या यः अ व ल रु स न सः भा उ कू य कं कू ह ल र्व मि र्वा पि यः प र्व व ल क
न मा उ कू य क ॥ अं वं ॥ अं जि र्वं कू र्ण दि ॥ थ न य च ग म् थ य चा म् क य क ग व प व व ल क स्त्री या क क ॥

गालिगदलाकिग॥

गाथा॥ यद्वज्रजालस्य वनमालाः गीतनस्य यत्पुष्पवनदीयविविक्तगन्धेषु जातिः ४ यः
किममं विमलं गीतं कलसं लं रुवकुं यजमोरिषकं ॥ थननलाः लंजीः किं ह्यः कूकूमयि
यं गुः कयं नमः सलयन ॥ थननवमः ॥ सिंधुनियमासिदिगनास्यं वियगं ॥ ॐ ह्रीं मवायाक
माणा रुनमं दम ४ कासं ॐ ह्रीं य ॥ नासिलजालायगं दिववासा ह्यस्वाहा ॥ आरुन
हविय ॥ अं स वा वनहारुष ह्यस्वाहा ॥ थनदजया कसिंधुकाय ॥ ॐ ह्रीं मवायाक माणी सिंधुन
ह्ययमं द ४ काय ॥ ॐ दं कलसं व वदानी ॥ धातुकनमस्तु कं यद्वा कं पूजनार्थं यमकूटय चकल

६०

१४

ह्रवं ॥ मातृकिं नमः अं वज्रसत्वं ॥ ॥ आदालवनगुठं ॥ वः पीतकासुमधनं कथा ॥ शोराः
जनमस्तु मास्वनादिना जा कनचकथा ॥ पालः विः वा कूः मि कस्वां सिः मधं ह्यः सहा ह्यः हाः गवय
नायः अकं न ॥ थनं ह्यः रुं स क रि ॥ डि कां काषायकं मस्तु ॥ अं अश्वी उ ह्यस्व न दारिः
हा कयजुनस्तु गुं थि माला वि ॥ लं विनस्तु ह्यं रुं ह्यः स्वाहा ॥ वज्रनाउ चामरुं ह्यः
य ॥ रुला रिखक ॥ थनलिवाल क ह्यः रुं ह्यः रिथान न ॥ जजु नालकः सला अमनया अवा लः
सस्वां ह्यः रुं ह्यः रुं वना ॥ ॥ न्य ना के न ह्यः रि नः वा धि विरु ह्यः नूर्यं ह्यः वयि लाः कं ह्यः रुं ह्यः रुं दयस्तु

प्राणिगुरुहकिपा॥

वीजाकननानालोकधामरुजित्वाअकनिष्ठमुवनंगत्वाकस्मादाकृष्टधीरुल्लोनीनैविकथ
न॥पाःनीःलोःपलाघंमुक॥ ॥कभाधीरुल्लेहंरुदत्वाःयवस्यरुक्मनयालिखित्वाला
जाकनःयवंधीरुल्लेवधयक॥ ॥थनलाहोमसःस्वस्तिवायाअःनायश्चककस्य
याललाहोमसयालविहाहोलयःऊनालेमकसपोलविमंकयाअखनखिपकः
चिस्तिन॥००दिमूवाकदकसाःउपाध्मश्चनयालःलज्जाहोयमंदमरकासी॥गमथायथक॥
००र्यमाथागकामूडाःहानालोकप्रणकनीःगृहीत्वायासिनायासिःबृद्धकृष्टप्रवर्हिनाःयन

६९

१५

हाननसत्वेनप्रहोपायात्मसुल्लेःकामात्वेयत्रियूजयक॥थनअलिनिर्भायमज्जुआंमव
बृद्धचूजामसिमहावजाषीषःवधकिष्ठरुदृष्टस्वाहा॥जालहोमोकायाअंवरुहासस
मयमनस्मनस्वाहा॥कभाअग्निप्रदकिष्मा॥यहमसुल्लेहयक॥कूलकुर्हिबयय
॥दूधालथय॥नैवात्यकानस००ीधमकानसःस्वस्तिवायाअःथनकाहर्हिनिः
जाऊनःवजगाववाःमकरुःअलिनिःजाहाताःसग्वनकायःसरुल्लया॥कृवाक॥००र्यमाः
आगमीमूडाःहानालोकप्रणकनीःगृहीत्वायासिनायासिःबृद्धकृष्टप्रवर्हिनाःयनहान

गोविन्द ह्येति या॥

नत्वेन प्रहृषाया लसत्सु लं कामाख्यं यन्निपुणं यन् ॥ अथ गार्थां द्रयकं न चाकस्मि वाकं
न द्रयकं ॥ ॥ अथ १२ अक्षु मसीन ॥ बालसु खी खलं खलु कुलं ॥ खिपन रु न ॥ अथ न
वाधन कुर्यात्सु सु न ॥ च न ॥ ॥ जाह्नव मन्त्र ॥ अदिवा न्न न ध्यान स माधि ध्यान
पीन सखा हा ॥ पला धी म् न प ॥ ॥ ॐ निपाति गुह्य विधि ॥ ० ॥ अथ अः
गित क्रियाः राव ना ॥ अग्नि कृष्टु स स्त्री कृष्टु लं ॥ न ना अनादि स सिद्धि वृद्ध विम्ब कं ॐ
दप नि मां दृष्टु य जा क ना म सु ॥ नि मूर्ति ॥ ४ सु पा क ली हा ज स ना रु का नि वि भुं ह

६२

१६

अग्नि क्रिया॥

सोम्या य न वा नू ज टा प्र व द्यो ॥ क ल द त्र भो ली वि वि ण र न ह ॥ ॐ गार्वा ली ला स्य द य
अ ग ती ४ ग ॥ ह स्मि का स र्व व न प्र दायि नीः द ह्नु कृ णी य रु स मू व कं ॥ या या दिः अग्ना रु नी
॥ अं शा क का र्ण य रुं स्वा हा ॥ अ ॥ म क न वी दि द्रयः अरु नि वि य ॥ सु ना या र्ण य निः
छा द व थि य कः बाल स थि य कं ॥ ॥ प ला धी म् न ग ॥ ॥ ॐ नि अग्नि क्रिया विधी
॥ ० ॥ ॥ क ना य नि छा ॥ अथ न म लु ल स स्त्री कृष्टु लं ॥ न ना अनादि स सिद्धि यथ म लु लं
ह व रुं क कि न ह स्मि त्वा अ क नि ष्ट रु व नं ग त्वा न रु म् अ ना दि स सि द्धि य थ म लु लं

४

सर्वत्र ध्यातः॥

[illegible]

22

॥ ३ ॥ अं सर्वकथागणपूजाप्रवर्तनाय आत्मानं निर्यो कया मि ॥ अं सर्वकथागणवज्रधर्म
 प्रवर्तय मां ॥ यश्चि म ॥ ४ ॥ अं सर्वकथागणपूजाकर्मक्ष आत्मानं निर्यो कया मि ॥ अं सर्वक
 थागणवज्रकर्मकू नूष मां ॥ ५ ॥ ॥ न ॥ ५ ॥ कथावृत्तानामलिष कलु जगत्ता एभ्य
 वज्रि एगु एभ्य कथायथा दह रुक् ॥ ६ ॥ अददधमस्य हि ॥ ७ ॥ किमलुपवमविधि ॥ ८ ॥
 प्रमिष्टा दंडाया कक्षां दृष्ट्वा लला ॥ ९ ॥ रावना ॥ स्वहृद्दीप्तमयस्व ॥ १० ॥ अं सर्वकथागणवाधिसत्त्व वि
 श्या दवर्गा गणगणनमायू निरुं दृष्ट्वा ॥ ११ ॥ ॥ यनस्त्रानगाथायात्संगलं हि कर्तव्यं नर्मपः

विष्णुः

विष्णुः पूष्य क्रिया कृत्वा नारायणं कुरु कुरु गगनं दुरुगवान्मृनिष्ठा कर्मिहं कर्मगलेन
वक्रुण्य नमो रिषकेशायथा हि जातमात्रं लयादिना भीखलं वंहाय अं वजा दकारिष कंच
दं ॥ यं लायं मुक्तां कुरु कुरु ॥ ॥ यन वंला कुरु दंडो दंडो पुनिष्ठा या य ॥ आचार्य वज
यं वसुधं दंडाया कः कनकाडा का ॥ ॥ गज स्त्री माला काय श्रु कुरु कुरु दंड जाय या य ॥
जं दंडो वजीरु वदु निष्ठु रवं दंडो दंडा धाव १०८ ॥ ॥ यन आचार्य कुरु विषदक
याडा पुनिष्ठा दंडाया कः यधमो गाथा यदपाडा कायं लूय ॥ स्त्री माली कायाय कः मादम वजं धि

६४

१८

मरुतः

य ॥ अं सुप्र किं कुरु वज्र स्त्राहा ॥ ॥ ॥ विष्णु क्रिया विधि ॥ ॥ कुरु ४ यथा धाधि वज्र क्षः
वृद्धा नां यथा दुरुमहा मरुममापि जात सार्थाय खवज्जी ददाहि म ॥ यन रावना ॥ अं आ ४ नः
लसक वज्र पि नं हान सत्वन की ॥ ॥ कुरु नरु कुरु तथा गुरु दवी रि ४ कुरु न रिषि कुरु मान
कुरु वज्रा रि ४ नूय मानं मंगल ॥ ॥ गीर्ण राव य ॥ यन स्त्रान ॥ यत्नं गले हि कुरु कुरु पन
मप विष्णु पूष्य क्रिया कृत्वा नारायणं कुरु कुरु गगनं दुरुगवान्मृनिष्ठा कर्मिहं कर्मगः
लं वक्रुण्य नमो रिषकेशायथा हि जातमात्रं लयादिना मरुटा रिषक विषय ॥ नलसम वज्र

वज्रारिषक॥

पिनं कत्स रा वं पापं म कूटारि ख कविय ॥ अं वज्र धा त्वं ध्वनी अरिषि चरुं ॥ म ॥ अं स त्व
वज्रि अरिषि चरुं ॥ पूर्व ॥ अं न त्व वज्रि अरिषि चरुं ॥ द किं ॥ अं धर्म वज्रि अरिषि चरुं ॥
पविम ॥ अं कर्म वज्रि अरिषि चरुं ॥ अ ॥ उरु व ॥ अरिषि चरुं म हा वज्रि धा क न म सु क
यूष्मा क पूजना र्था य म कूटय व ॥ कू ला रु वं ॥ अं अ ॥ वज्र म कू टारि ष क च रुं सु कः
त्व म रुं ॥ ॐ ह्य द कारि ख क ॥ अं वज्र रु ध्य हा ॥ ॐ कि म कू टारि ष क विधि ॥ ॥ वजा
रि ष क विद्य ॥ द उ या क थू क या नू ग्व उ थिय क विद्य ॥ अं रुं ॥ अं रुं ख ॥ अ शारि ष क त्व म सि

६५

१९

वज्रारिषक॥
वज्रारिषक॥

वृद्धे वज्रारि ष क रु ॥ ॐ द कत्स र्व वृ द्धा नाः ग रु वज्र सु सि द्ध य ॥ ॐ नि वजा रि ष क ॥ ॥
अथ दृष्ट थ मं दृ ष्ठ रि ष क विद्य ॥ अं वजा धिय कि त्वा म रि षिं चा मि कि ष्ट वज्र स म य त्वं हा
वज्र दृष्ट न कि रु अ ॥ ग रु हा ॥ ना सि म या रु ग व न म यि स नि दि ना रु व ॥ ॐ नि य
रि ष क ॥ ॥ लं च र्ग कि ॥ च क ॥ अं वज्र स त्वा मे रि षिं वा सि वज्र ना मा रि ष क
॥ द उ या ना म सा या नि च क ॥ ॥ य कि मा दि द व ना नी स वज्र वज्र दृष्ट क न धृ र्ग हान
मू डा यी लि जी ना रि न र्य वि हा वा ॥ थ न प्र कि मा दि द व ना या वज्र दृष्ट जा दा ला हा नः

ज्ञान आलिंगन मूदा या कः लयं ऊत स चा द व ऊ खडा स क ॥ खडा स चा द घ ष ऊत स क ॥ थ
 थ आलिंगन मूदा या कः लयं ऊत स चा द व ऊ खडा स क ॥ खडा स चा द घ ष ऊत स क ॥ थ
 रिष क ॥ ० ॥ कदन च क ॥ मरि व ऊ स त्व ह दी ऊ कि न ष नी र्ग स वि या वे
 ना च न वा न प्र व ष ड वी रु र्ग म हा स ख म न रु या व ऊ य आ ला मू क ष वा धि चि रुः
 ख नू पा ४ प्र कि मा दि द व ना या मू ख प्र वि र्ग कि चि न थ न ॥ कू कि गु आ रि ष क ॥ ० ॥ कः
 रु न व ऊ स त्व ना य नी रु या ४ स मा य ना या ४ प्र कि मा दि द व ना याः स रु जान न द म य त्व म धि म

६६

२०

यथ क ॥ ॥ प्र ह्ना ह्ना ना रि ष क ॥ ० ॥ कदन त्व व ऊ स त्व प्र कि मा दि क व रु र्ग ही ष स
 नू पा प्र कि मा दि द व ना या दि न ष वा स ना य न स म हा स ख म यः ४ नू ना क नू ष रि नै क न
 स स मा धि र्ग व क ॥ व रु र्ग रि ष क ॥ ॥ यं लां द्यं मु क ॥ ॥ अथ व ऊ ऊ र्ग लि
 व ष ॥ ऊ ऊ मा न न हा थ ऊ ऊ ले र्ग ॥ आ चार्य द ष थ सी गा था ॥ ॥ आ का ष
 त्या दि वि कू ला द ना दि नि ध न य न ष म हा व ऊ स म य स त्व व ऊ स त्व द्यं सि द्ध य स वा रु मा म
 हा सि धि मा हे ष्वा दि द व ना ॥ सर्व व ऊ ध ना ना जा सि धि म प न मा क न ष नि द्यं वि सा ह व क

अथपि सर्वनामान्नागिनः॥ कल्लनसिद्धिभरुगवान्महाजातामहाजनः॥ अथ कल्लुः
 द्वधर्मोत्ता आदिमकसुथागकशासमकरुद्रसर्वात्मा वाधिसत्वप्रसिद्धयामर्षोत्तमाः
 महासिद्धिः सादेष्टव्यादिदिव
 सत्वमनोव्याधिः सर्वसत्वद्विदि
 ना॥ यन्नसत्यनसकृद्धान् यद्वापायात्मसुल्लं कनसत्यनमनार्थं कामात्त्वपि नूयक॥
 ॥ यन्नप्रतिष्ठोदकक्षमाहा १८४ कथयकः प्रकिष्ठोदकं कथयकः प्रकिष्ठोदका कथयकः

६९

२९

ॐ
ॐ
ॐ

पूष्यन्याहा॥ यंलायंमुक्त॥ शानाकनधाले ३५७५॥ ० ॥ यन्नकर्मवजिहाथयूजायाय
 शारुल आदिंलडाहाय॥ आचार्ययावजयेष्टंथिस्यः कर्मवजिया शारुलीथिस्यः ऊजमानं
 यनिसकलस्यनंथिस्यः॥ यिहाला॥ ॥ यन्नकथयय॥ ॥ यन्नयंयन्नप्रकिमाकिष्ठय
 कल्यकल्यसकृदुकी॥ ॥ कल्यमखः निकल्यमखः कल्यमखः कल्यमखः कल्यमखः
 कल्यवृक्षसिमादभालीः सदासर्वकालं कलयालथिर्नविश्रयमाल॥ १ ॥ नकलुद
 वनासर्वक्रियमिजलवायवः॥ ॥ सूर्यस्वकादिदवला कपनिर्जनः धर्मसाजः नका

नासिद्धिर्नाम न कुरु देवता सर्वोऽकुर्वन् प्रणिमां चिन्तनं ॥ कुरु दानपत्रं ॥ ४८ ॥ किंचित् स्वस्ति
 यष्टिं च सर्वं ॥ ४९ ॥ यत्कुरु कायार्जुनः यत्कुरु वाग्जुनः यत्कुरु विदुर्जुनः यत्कुरु सर्वं कुरु
 महसि ॥ नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥ ५० ॥ गायत्र्यं नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥ ५१ ॥ नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥ ५२ ॥
 ॥ ० ॥ देवयानं दक्षयज्ञिकं यज्ञं दक्षयज्ञिकं पूजाया प्रजापतये ॥ ५३ ॥ यन्न दक्षयज्ञिकं
 दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं यन्न दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं

६५

२३

अलिलहि चकः कृमाजी पूजा ॥ अगममं कुरु लसा मन्त्रं ॥ ५४ ॥ अलयसवीरु कसी मिज
 नैकनकं दायकं ॥ यन्न दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं
 नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥ ५५ ॥ नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥ ५६ ॥ नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥ ५७ ॥
 कोमानि पूजायाय ॥ यन्न दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं
 दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं दक्षयज्ञिकं

शक्रियाविधिसमापः॥

॥ ॐ ॥

१०

२४

प्रसादिता ॥

वयं व. सह जान न्याय न्याम रु॥

पूजाः शिवाधिवासनः मलुलथिलमुक्तिः

आमिर्वा द. सर्वमाह निष्कृत्य॥

कस्य कमा नीय जा सुयः कमा नी

कलुल॥ समया चक्र॥

कवि सज्जनः मलुल पाक कृष्ण दिस्त्रा क्राय॥

॥ दक्षपति कय कः मा १५४॥

॥ धन कामा नी

गव वरवाल दूयः पूर्य दूति या य. अमा कन॥

चन पूजा द. कृष्ण. वा धानः निमला उ. दशु समय

या चक. स्त्री. महानी का स्य॥ वाही कय॥ गीत. चकी

सी हा न॥ गीत. ऊर्य शाय लाय मु

गल वक्र धूमी गनी॥ हा व वलि॥ गीत. प्रमः

जिनाः यश्च कृपनिवर्तकः जिनागुह्यह्ना नादयः भाकपदं यस्या रुस्य कृपागु नरुस्य मनसा नि
 र्णयप्रसं क्षयवह ॥ ॥ क्षमाकनः खमार्यन ॥ यचंगमा चाकथेवस्तु वनास्तु सर्वसत्त्वा
 सुखिनो रुवकु। सास्तु नमस्तु न नदवपूर्यवर्द्धनमस्तु ॐ हामुस्तु ॥ यजंगमाः चाक
 नथेवस्तु वनास्तु सर्वसत्त्वाः सुखि नारुवकु। सार्कवी नार्गुन नदवपूर्यः धर्मनमस्तु ॐ ह
 मुस्तु ॥ यजंगमाः आकथेवस्तु वला सर्वसत्त्वाः सुखिनो रुवकु। गहानमस्तु न नदवपूर्यसंघं
 नमस्तु ॐ हामुस्तु ॥ श्रीविर्वा ददयपनि सिद्धपाल ॥ ॐ निक्षयवलिसमाफ ॥ ॥ ॐ ॥

काजिनाः यश्च कृपनिवर्तकः जिनागुह्यह्ना नादयः भाकपदं यस्या रुस्य कृपागु नरुस्य मनः
 सानि र्णयप्रसं क्षयवह ॥ ॥ क्षमाकनः खमार्यन ॥ यचंगमा चाकथेवस्तु वनास्तु सर्वसत्त्वाः
 ॥ सिद्धपाल ॥ ॥ ॐ निक्षयवलिसमाफ ॥ ॥ ॐ ॥

आशा बरकाथ

2657

ASHA ARCHIVES

2